NJESR/January2023/Volume5/Issue1 E-ISSN-2582-5836
DOI-10.53571/NJESR.2023.5.1.51-54

'सूर्यबाला कृत उपन्यास 'दीक्षांत' में अभिव्यक्त मर्मस्पर्शी यातना का विवेचन'

मोनिकाशर्मा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय
बीकानेर
राजस्थान

(Received:28December2022/Revised:31December2022/Accepted:20January2023/Published:31January2023)

सारांश

शिक्षण संस्थानों के बढ़रहे व्यवसायीकरण और छात्र वर्ग कीमूल्यहीनता का यथार्थ चित्रण इस उपन्यास का प्रमुख विषय है। उपन्यास का प्रमुख पात्र विद्याभूषण शर्मा है जो एक महाविद्यालय के शिक्षक हैंविद्याभूषणके माध्यम से आज के युग में ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ,सादगी पूर्ण और सच्चे व्यक्ति कीयातनाकथाकारुणतम चित्रण किया गया है। शिक्षण संस्थानों से जुड़े अधिकारी वर्ग, प्रबंधन मंडल और प्राचार्य की कूटनीतिवव्याप्त राजनीति का खुलकर पर्दाफाश किया गया है। मध्यमवर्गीय व्यक्ति का शिक्षा वआदर्शों के कारण निरंतर वर्गीय व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष को 'दीक्षांत' उपन्यास में उद्घाटित किया गया है।

मुख्य शब्द: संस्थान, व्यवसायीकरण, महाविद्यालय, मूल्यहीनता, यथार्थ,चित्रण, ईमानदार, सादगी, पूर्ण ,अधिकारी, प्रबंधन, कूटनीति, पर्दाफाश, आदर्श, निरंतर, व्यवस्था और विरुद्ध।

प्रस्तावना

साहित्य सदैव समाज का आईना रहा है। हमारे चारों जो कुछ भी ओर घटित हो रहा है वही साहित्य में परिलक्षित होता है। समाज के सभी क्षेत्र चाहे वे शिक्षा से जुड़े हो, चिकित्सा से ,विकास या कोई भी विभाग साहित्य के दायरे से अछूता नहीं रहा है। इस उपन्यास में शिक्षा के मंदिर की खोखली होती नींव और युवा पीढ़ी के अंधकारमय जीवन के खतरे को इंगित करने का प्रयास किया गया है। पद और धन का अहंकार इस तरह सर चढ़कर बोलने लगा है जहां ज्ञान को लक्ष्मी के पैरों के तले रौंद दिया जाता है। शिक्षण संस्थानआजविद्या का मंदिर न रह कर डिग्री बेचने की दुकानें मात्र रह गए हैं। इन्हीं डिग्रियों को खरीदकर भ्रष्ट शिक्षक वर्ग तैयार हो रहा है जिनके हाथों में हम भावी पीढ़ी को सौंप कर निश्चित हो जाते हैं।जहां उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करना ही व्यर्थ है। संस्कार ,नैतिकता, अनुशासन आदि शब्द के शब्द कोश की शोभा मात्र रह गए हैं। ऐसे शब्द उपहास का विषय बन चुके हैं। केवल सतही सुधार की बजाय समस्या को जड़ से काटने की आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य सूर्यबाला के उपन्यास 'दीक्षांत' का विश्लेषण कर यह जानना है कि हमारे समाज में क्या कुछ घटित हो रहा है जिन्हें सुधारने के लिए हमारे द्वारा क्या प्रयास किए जा सकते हैं शिक्षा के सौदागरों के चंगुल से भावी पीढ़ी को कैसे बचाया जा सकता है ।एक सच्चे शिक्षक को अपने आदर्शों की कीमत अपनी जान देकर क्यों चुकानी पड़ती है।इनसभीहालातोंकोगहराईसेजानना इस शोध का उद्देश्य है।

शोध प्रविधि

शोध कार्य में साहित्य की वर्तमान दशाओं का वास्तविक विश्लेषण किया गया है इसलिए लिखित सामग्री को आधार सामग्री के रूप में लिया गया है यह द्वितीयक स्रोतजिससे आंकड़े तथा तथ्य संग्रहित किए गए हैं। इन सूचनाओं से आगमन- निगमन, सापेक्ष ज्ञान मीमांसा पद्धति का प्रयोग कर अंतिम निष्कर्ष प्राप्त किया गया है।

साहित्यावलोकन

हिंदी साहित्य जगत में सूर्य वाला एक लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार है। इनके लेखन पर शोधार्थियोंवसंपादकों की विशेष दृष्टि रही है।इनके साहित्य पर कई रूपों में कार्य हो चुका है।'कथा लेखिका सूर्यबाला'- डॉ. मोनिका संतोष ड्राइवर (2008),'कथाकार सूर्यबाला'- डॉ मिरगणेअनुराधा (2009),'सूर्यबालाः शब्द- शब्द मानुष गंध'- डॉ. वेदप्रकाश (2012),'सूर्यबाला के कथा साहित्य में युगबोध' डॉ.बसंत कुमार माली (2013),'सूर्य वाला की कथा साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन'-डॉ. रागमाला धारबाधुले(2014),'सूर्य वाला की कथा साहित्य में नारी संवेदना'- संगीता राणा (2016),'सूर्य वाला की कथा साहित्य का अनुशीलन'-संगीता राणा-(2016)'सूर्य वाला साक्षात्कार के आईने में' तसरेमगुजराल (2017),'सूर्यबालाकासृजनसंसार'-दामोदर खडसे (2017), आदिपुस्तकें लिखी जा चुकी है इनके अलावा शोध कार्यभी किए गए हैं। यह शोध आलेख एक शिक्षक की मर्मस्पर्शी यात्तना का विवेचन करेगा।

विषय विस्तार

शिक्षा हमारे जीवन केप्राथमिकसंस्कार हैं जो हमें जन्म से पूर्व ही माता के द्वारा प्राप्त होते है। वही संस्कार हमारे जीवन के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।लेकिनआज के परिदृश्य में देखें तो उन संस्कारों का निर्वाह हमारी कायरता का प्रतीक बन चुका है। जिनकी परिणति भी अक्सर दुखांतहीहोती है जैसा कि इस उपन्यास के पात्र विद्याभूषणको अपने मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ती है। यह उपन्यास परिसर, यंत्रणा के कोणचक्रव्यूह, प्रयाण, लोग और आलोक-बिंदु खंडों में विभक्तहै।

"लेखिकानेविसंगतियों, विद्रूपताओं और मोहभंग के बीच शाश्वत मानवीय मूल्यों की रक्षा का सराहनीय कार्य किया है।"1 शिक्षण संस्थानों की कुंठित राजनीति करते प्रबंधकों और फैली विसंगतियों के बीच कथानायक विद्याभूषण शर्मा आदर्शों,मूल्योंव संस्कारों की विरासत लिए कॉलेज में नौकरी करने आता है। यही विद्याभूषण'शर्मा सर'की संज्ञा पाकर राधिका देवी बिसारिया कॉलेज के रंगमंच पर मुख्य पात्र की भूमिका निभाते हैं।

शर्मा सरस्नातकोत्तरहिन्दीविषयमें गोल्ड मेडलिस्ट है और शिक्षा की शीर्ष उपाधि पर पीएच.डी. से भीविभूषित हैं लेकिन कॉलेज में उनकी शैक्षिक योग्यता कोकोई महत्त्व नहीं दिया जाता।अन्यशिक्षकजो सामान्यशैक्षिकयोग्यतालिएहैउनकेबीचशर्मा सर ईर्ष्याकाकेंद्रबनतेहै।शिक्षकडिसूजाकेशब्दोंमें-''आपकी पीएच.डी. उसके सीने में कोफ्त के फन निकाल निकालकर फुफकारेगी कि नहीं,... जूनियर अस्थाई अध्यापक उनसे ज्यादा योग्यता वाला और लियाकत वाला है।"2

शर्मा सर श्रम,अध्यवसाय और निष्ठा से अर्जित ज्ञान की विरासत नई पीढ़ी को सौंपना चाहते थे और काफी हद तक सफल भी होते हैं लेकिन कुछ अपरिपक्व मस्तिक से तुच्छ बुद्धि वाले छात्रों द्वारा रुकावटें पैदा की जाती है। उपन्यास का एक पात्र रतन बरुआ एक उच्च उच्च वर्गीय परिवार का उदण्ड छात्र है जो छात्रों शिक्षकों को आए दिन परेशान करता रहता है। हिंसा फैलाने व नकल के दम पर परीक्षा पास करने पर विश्वास रखता है। कॉलेज की व्यवस्था बिगाड़ना,शांति भंग करना और शिक्षकों कार्य में बाधा डालना ऐसे छात्रों का परम धर्म है।

शर्मा के शिक्षण के दौरान एक वाकया-"देखिए परिश्रम ऐसे लिखते हैं...चॉक लेकर ब्लैक बोर्ड की ओर मुड़े अचानक से एक चॉक का टुकड़ा उनके सिर के पिछले भाग पर लगा उनका गुस्सा खौला लेकिन उसे पीकर वापस मुड़े जैसे कुछ न हुआ हो।"3 शर्मा सर द्वारा छात्रों को दण्डित करने व उनका विरोध करने पर उन्हें कॉलेज से निष्कासित किए जाने की धमकियाँ मिलने लगती है।लेकिन धर्म के रास्ते पर अडिग रहने वालेशर्मा सरकभी गलत का साथ नहीं देते।

इस कॉलेज के अध्यापकों के तीनवर्ग दृष्टगत होते हैं इसमें मध्यम वर्ग में शर्मा सर को रखा जा सकता है जो शैक्षिक दृष्टि से उत्कृष्ट हैं फिर भी उन्हें न तो उचित पदववेतन प्राप्त होता है और नही सहकर्मियों के बीच सम्मान व सहयोग मिलता है।

'दीक्षान्त'उपन्यास में उच्च वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है मिसेजसब्बरवाल धन और पद का नशा उनके सर चढ़कर बोलता है "मिसेजसब्बरवाल की कार हल्के संगीत भरे सुरवाला हॉर्न बजाती हुई कॉलेज के गेट में दाखिल हो, झटके से रुकी। अंदर से मोतीजडेटॉप्स और विदेशी खुशबू बिखेरती, रुमाल अंगुलियों में फँसाती हुई मिसेजसब्बरवाल उतरी।"4

कॉलेज का तीसरा वर्ग है प्रशासनिक समिति।यह एक पूंजीपति वर्ग है निजी स्वार्थ पूर्ति के लिए असामाजिक तत्वों को बढ़ावा देते हैं और शिक्षकों को प्रशासन के हाथों की कठपुतली बनाए रखना चाहते हैं।इस वर्ग का प्रतिनिधित्व करतेहैं राजदान और चन्दभान।

"शिक्षक का कार्य क्षेत्र छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है और उन में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना है यदि शिक्षक नैतिक मूल्यों का हनन करने लगे तो आगे चलकर छात्रों के जीवन में सकारात्मक मूल्य स्थापित नहीं हो पाएंगे।"5अत्यंत शांत, सात्विक, संतोषी और विनयशील शर्मा सर को कॉलेज प्रशासन द्वारा इस हद तक प्रताड़ित किया जाता है कि वह अपना मानसिक व शारीरिक संतुलन खो बैठते हैं। यह असंतुलन उनकी मृत्यु का कारण बनता है।

"दरअसल शिक्षा के नाम पर साक्षरता के साथ मूल्यों में एक बड़ी गिरावट आई है गांव में पढ़ने वाले जमात पहले अपने घर से अलग होती है ,फिर अपने गांव से इसलिए स्कूल-कॉलेज से होता हुआ अनजाने एक परजीवी समाज देश की नीयति बन चुका है।"6 इस उपन्यास में लेखिका ने शिक्षा क्षेत्र को आधार बनाकर समाज की जड़ों को काटती है अमानवीय विभिन्न स्थितियों पर पूरी शक्ति सामर्थ्य से प्रहार किया है ताकि कुछ परिवर्तन हो। उच्च शैक्षिक शैक्षिक योग्यता के बावजूद कथा नायक की आर्थिक स्थिति बहुत रुग्ण है।घर की सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्हें ट्यूशन पढ़ानी पडती है। लेकिन फिर भी उनके परिवार उनके परिवार को अत्यंत कष्टों का सामना करना पड़ता है। शर्मा सर की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी के पास कोई जमा पूंजी नहीं रहती है और उनके अंतिम संस्कार के लिए उन्हें अपने सोने की बालियां बेचनी पड़ती है।

"यह सत्य है कि समाज शिक्षकों की सामान्य चिंता का भार वहन कर ले तो, उन्हें राजनीतिक प्रपंचों में लिप्त नहीं होना पड़ेगा। परिणामतः शिक्षा व्यवस्था में सुधार होगा, जिसका समाज कोभी लाभ मिलेगा।"7 दीक्षांत उपन्यास में बदलते दौर की विसंगतियों को उकेरा गया है। विद्रूप संदर्भों को उभारने का प्रयास किया गया है। दुःख और द्वंद्व की परिस्थितियों के बीच जीवन के प्रति आस्था और मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा अक्षुण्ण रखने की जद्दोजहद की गई है।विद्याभूषण शर्मा के माध्यम से समाज के आदर्श गुरु की छवि प्रस्तुत की गई है ।

"चक्रव्यूहमेघिरा हुआ विद्याभूषण कोई अभिमन्यु नहीं है बल्कि शिक्षेतर व्यावसायिकशक्तियों ने समय-समय उसके आदर्श और व्यक्तित्व को कुचल-रौंदकर पूरी तरह अस्तित्व विहीन बना दिया है"8विद्या के बढ़ते व्यवसाय के कारण आगामी दुष्परिणामों की ओर संकेत किया गया है। उच्चपदों पर बैठे अयोग्य व्यक्तिअधिकारों का दुरुपयोग कर नई समस्याओ को जन्म दे रहे है।

आज मनुष्य अत्यंत स्वार्थी और आत्म केंद्रित हो गया है और भौतिक उत्कर्ष उसकी पर उपलब्धका पर्याय बन चुकी है। ऐसी स्थिति में मूल्यों के निर्वाह की बात करना तलवार की धार पर चलने की जैसा है ।जो मूल्यों का निर्वहन करते हैं उनकी भौतिक उपलब्धियां निम्नतर होती है। शर्मा सर सदैव अन्याय का सामना करते है।बरुआ से कहते हुए-"- मेरे विषय में नंबर घटाने-बढ़ाने या पास-फेल करने का अधिकार सिर्फ मेरा है....तुम प्रिंसिपल,

वाइस प्रिंसिपल तक जाकर अपना सोर्स आजमा सकते हो इस मुद्दे में मैं झुकने वाला नहीं, इतना समझ लो बेकार मेरा समय नष्ट करने से कोई फायदा नहीं।"9

आज चंद पैसों के लिए अपना ईमान बेच ते देर नहीं लगती और किसी को किसी भी हद तक गिर जाते हैं। लेकिन शर्मा सर ने अपने स्तर पर मूल्यों को जीवित रखा। जीवन में टूट जाते हैं लेकिन भ्रष्ट बने समूचे तंत्र में अपने संस्कारों के विरुद्ध कोई समझौता नहीं करते। स्वार्थ और व्यक्तिगत हित साधना के लिए अन्य शिक्षक प्रशासन की चाटुकारिता करते हैं।

उपन्यास की स्त्री पात्र कुंती जो कथानायक की पत्नी है। कुंती को एक आदर्श पत्नी के रुप में दिखाया गया है।हर परिस्थिति में अर्धांगिनी होने का कर्तव्य निभाती है। शर्मा सर के अंतिम क्षण का करुण दृश्य-"क्षण मात्र में कुंती की फटी हुई चीखसारी निस्तब्धता तार-तार कर गयी पागलों-सी वह अपनी साड़ी के मेले आंचल से पूरी अर्थी को ढकने का जीतोड़ प्रयास करती वह उस पर ढह पड़ी।"10

इस प्रकार उपन्यास में इस ओर ध्यान आकर्षित किया गया है एक ओर जहां सामान्य वर्ग अपने मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम कर शिक्षण के क्षेत्र में जाता है वहीं दूसरी ओर मध्यमवर्ग अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए इस पैसे को चुनता है किंतु उच्चवर्ग शिक्षणसे जुड़ाव या तो समय बिताने के लिए होता है या प्रतिष्ठा बढ़ाने का साधन। सभी वर्गों की अपनी अपनी जरूरतें प्राथमिकता रहती है शिक्षण के प्रति कोई जिम्मेदारी का भाव नहीं रहता। उपन्यास में शर्मा सर के रूप में एक शिक्षक का करुणतम और मर्मस्पर्शी संघर्ष का चित्रण किया गया है जो यातना की पराकाष्ठा तक पहुंचाता है।

सन्दर्भग्रंथसूची

1. डॉ.- रतन कुमार पांडे- सूर्यबाला की रचना धर्मिता दीक्षांत के परिप्रेक्ष्य में, ज्ञान गंगा, दिल्ली,प्र.सं. 2012 ई. पृष्ठ-164
2. सूर्यबाला- दीक्षांत, अमन प्रकाशनकानपुर,तृ.सं. 2017 ई.,पृष्ठ-47
3. वही,पृष्ठ-14
4. वही,पृष्ठ-84
5. डॉ.प्रवीण चंद्र बिष्ट- शिक्षण संस्थाओं का पोस्टमार्टमः दीक्षांत के बहाने,अमन प्रकाशन,कानपुर,प्र.सं. 2017ई.,पृष्ठ-135
6. शुकदेव सिंह-दीक्षांतः शिक्षा की दुनिया में जो है, ज्ञानगंगा, दिल्ली,प्र.सं. 2012 ई.,पृष्ठ 160
7. डॉ.भागीरथ बडोले-'दीक्षांत' यातना के विरुद्ध एक समर्थ प्रयत्न,अमन प्रकाशन कानपुर, प्र.सं.2017 ई. पृष्ठ- 120
8. मदनमोहन तरुण-दीक्षांत,अमन प्रकाशन, कानपुर.सं.2017ई.,पृष्ठ-117
9. सूर्यबाला -दीक्षांत,अमन प्रकाशन,कानपुर, प्र.सं.2017 पृष्ठ-82
10. वही,पृष्ठ-109